15 अगस्त 2020 का उद्बोधन

प्रो. साकेत कुशवाहा

सुप्रभात !

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के सम कुलपति प्रोफेसर मित्रा जी, संकायाध्यक्ष गण, विभागाध्यक्ष गण, विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर तोमो रिबा जी, प्रांगण में उपस्थित प्राध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, शोधार्थी, विद्यार्थी, हमारे विद्यालय परिवार से आए छोटे-छोटे बच्चे और उनके अध्यापक तथा अन्य सभी जन जो इस समय यहाँ मौजूद हैं, मैं साकेत कुशवाहा देश के 74 वें स्वतन्त्रता दिवस के पावन राष्ट्रपर्व पर अपनी ओर से तथा विश्वविद्यालय की तरफ से आप सबको हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएं देता हूँ।

मैं अपनी बात को शुरू करने से पहले देश के सभी स्वतन्त्रता सेनानियों को प्रणाम करता हूँ, जिनके बलिदान और त्याग का परिणाम है, हमारी आज़ादी। साथ ही मैं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर, अन्तरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई, आणुविक शोध के लिए डॉ. होमी जहाँगीर भाभा, अभियांत्रिकी के क्षेत्र में एम. विश्वैश्वरैया, कृषि वैज्ञानिक एम.एस. स्वामीनाथन, महान शिक्षा शास्त्री डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णणन जैसे आधुनिक भारत के दिशा-निर्देशकों और निर्माताओं को भी नमन करता हूँ। इस अवसर पर मैं अभी हाल ही में भारत-चीन सीमा पर गलवान घाटी में शहीद हुए भारतीय सेना के कमांडिंग ऑफिसर स्वर्गीय कर्नल संतोष बाबू और उनके साथी भारत माँ के वीर सपूत सैनिकों को तथा समय-समय पर देश के बाहर और भीतर देश की रक्षा के लिए अपनी कुर्बानी देने वाले समस्त भारतीय सेना नायकों, सैनिकों और सुरक्षाबलों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। हम सब जानते हैं कि यह समय कोरोना जैसी महामारी से उपजे संकट का समय है।

कोरोना से देशवासियों की रक्षा के लिए काम करते हुए अनेक कोरोना योद्धाओं को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी है, मैं उन सबको भी भावात्मक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

साथियों! *यह हमारा 74 वां स्वतन्त्रता दिवस है। हमारे लिए आज का दिन बहुत ही आनंद, उत्साह, अभिमान एवं गर्व का दिन है। आज ही के दिन अर्थात् 15 अगस्त सन 1947 को हमें अंग्रेजी शासन से आजादी मिली। हमारे देश को यह दिन दिखाने के लिए देश के स्वतंत्रता सैनानियों ने बहुत बड़ी-बड़ी कुर्बानियां दीं, जिनको हम कभी भूल नहीं सकते। 'तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें' के भाव को लेकर देश-हित में उन्होंने अपने प्राणों की भी परवाह नहीं की और हँसते-हँसते अपने जीवन को देश के लिए, देशवासियों के लिए, हमारे लिए न्योछावर कर दिया। आज उन्हें याद करने का दिन है, उन्हें नमन करने का दिन है। मैं पूरी श्रद्धा के साथ उन सभी अमर हुतात्माओं को नमन करता हूँ।*

यह हम सबको ज्ञात है कि विगत 73 वर्षों में हम काफी तेजी से आगे बढ़े हैं और एक देश के रूप में हमने बहुत कुछ हासिल भी किया है। लेकिन अभी भी हमें बहुत क्षेत्रों में बहुत काम करना शेष है। देश का विकास तभी संपूर्णता में और सही दिशा में होगा जबकि देश का प्रत्येक नागरिक उसमें अपनी भागीदारी करेगा और अपनी जिम्मेदारी को महसूस करेगा। अपने अधिकारों का सही ज्ञान और कर्तव्यों का समुचित अनुपालन इसका मूलमंत्र है। आप लोगों को संबोधित करते हुए मैंने कई बार इस बात पर जोर दिया है कि हमें अपने मौलिक अधिकारों के साथ-साथ मौलिक दायित्वों पर भी ध्यान देना चाहिए। इसी मन्त्र के अनुपालन से देश को शक्ति और समृद्धि मिलेगी। हमारा देश शांतिप्रिय देश है और शांति की बहाली के लिए शक्ति का भी होना आवश्यक है। इसका ज्वलंत उदहारण आपने अभी हाल ही में भारत-चीन सीमा

विवाद के समय देखा। देश हमारे लिए बहुत कुछ करने को तैयार है, इस भीषण महामारी के बीच भी देश ने हमारे भरण-पोषण की जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। हमारी ताक़त देश से है और देश को ताक़त हमसे मिलती है। इसलिए हमे पूरी निष्ठा के साथ निस्वार्थ भाव से अपने दायित्वों का निर्वाह करना चाहिए।

पिछले छ: महीनों से सम्पूर्ण विश्व कोविद-19, वैश्विक महामारी के प्रकोप को झेल रहा है। इस बीमारी ने विश्वभर में लाखों लोगों की जानें लीं । इतना ही नहीं, इस बीमारी ने विश्व भर की अर्थव्यवस्था चरमरा दी। कई लोगों की नौकरियां गयीं, खाद्य सामग्रियों में कमी आई, लोगों में दूरियाँ बढीं और माहौल में भी तनाव है। इस महामारी ने जीवन को नयी परिभाषा दी, हमारे जीने के तौर-तरीकों को बदल दिया और साथ ही हमें आने वाली चुनौतियों के लिए बेहतर ढंग से तैयार रहने की ओर सोचने के लिए बाध्य भी किया। हम यूँ ही हार मानकर बैठने वालों में नहीं हैं। सभी विभागों के प्राध्यापकों ने सफलतापूर्वक ऑनलाइन कक्षाएँ लीं, सत्रीय परीक्षा एवं छात्रों से असाइनमेंट भी जमा करवाए और समय पर परीक्षा परिणाम भी सम्बंधित विभाग को जमा किया। विश्वविद्यालय के लगभग सभी विभागों ने वेब-माध्यम से एक से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों, संकाय-संवर्धन कार्यक्रमों (एफ.डी.पी), परिसंवाद तथा व्याख्यानमाला आदि का सफल आयोजन किया है। इसके लिए आप सभी साधुवाद के पात्र हैं। शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ ही महामारी के इस काल में हमारा प्रशासन भी व्यवस्थित एवं सुचारु रूप से काम करता रहा। इसी बीच हमने विश्वविद्यालय के संविदा पदों के लिए ऑनलाइन साक्षात्कार कराया, हालाँकि अभी परिणाम लंबित है। विश्वविद्यालय द्वारा गठित टास्क फोर्स की टीम ने बहुत ही सराहनीय कार्य किया। यह हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है कि विश्वविद्यालय परिसर में कोरोना का कोई भी मामला आज तक दर्ज नहीं है।

साथियों ! *इस बीच हम सबको बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। विशेष रूप से हमारे छात्रों को बहुत परेशानी हुई। फिर भी हमने उनकी समस्याओं के समाधान के लिए हरसंभव प्रयास किया। छात्रों के बिना विश्वविद्यालय की कल्पना नहीं हो सकती, उसी तरह परीक्षा के बिना पढ़ाई भी सम्पूर्ण नहीं मानी जाएगी। इसलिए हमने यू.जी.सी. (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) के निर्देशानुसार ऑनलाइन परीक्षा कराने की योजना बनायी है। परीक्षा को लेकर छात्रों में भी काफी उत्साह देखने को मिला, अब तक लगभग 25000 छात्रों ने सफलतापूर्वक अपने परीक्षा फॉर्म भर लिए हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि हम सितम्बर तक परीक्षा की प्रक्रिया को संपन्न कर लेंगे और इसके बाद हम नए सत्र के लिए अपनी पूरी ऊर्जा के साथ आगे बढ़ेंगे।*

प्रिय साथियों ! *भारत सरकार ने तीन दशक बाद नयी शिक्षा नीति को स्वीकार कर लिया है। काफी लम्बे समय तक इसकी तैयारी चली और देश भर में चले विचार-विमर्श तथा विशेषज्ञों के सुझावों एवं समीक्षा के आधार पर हमारी यह नयी शिक्षा नीति आई है जिसमें कई आमूल-चूल बदलाव किये गए हैं। उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में भी काफी कुछ बदला गया है। यह बदलाव हम सबके द्वारा ही क्रियान्वित किये जाने हैं। नयी शिक्षा नीति का उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब हम उसे ठीक से समझें; उसके उद्देश्य को ठीक से समझें और ठीक दिशा में प्रयास करें। मैं पूरी निष्ठा से ऐसे तमाम प्रगतिशील प्रयासों का स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि भारत की नयी शिक्षा नीति 2020, उच्च शिक्षा में बहु-विषयक एवं समग्र शिक्षा के माध्यम से व्यापक बदलाव के साथ-साथ अपने मज़बूत नियामक ढाँचे से शैक्षणिक संस्थाओं की सत्यनिष्टा एवं पारदर्शिता सुनिश्चित करने के साथ ही छात्रों की रचनात्मकता एवं गहन सोच का विस्तार कर उन्हें आत्मनिर्भर बनने में मदद करेगी। शिक्षा में देश की GDP का कुल 6%*

खर्च करना एवं उच्च शिक्षण संस्थाओं में 2035 तक जी.ई.आर. 26.3 % से बढ़कर 50% करने का लक्ष्य अत्यंत ही सराहनीय कदम है। सर्वसमावेशी रूप से नयी शिक्षा नीति 2020, सभी के लिए उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित कर भारत को एक वैश्विक ज्ञान सुपर पॉवर बनाने में समर्थ होने के साथ ही भारत में शिक्षा के व्यापक सुधार के लिए एक मील का पत्थर साबित होगी। इस अवसर पर हम सभी को यह विचार करना होगा कि एक शैक्षणिक संस्थान में कार्य करते हुए हम कैसे लोकतंत्र के विचार और आदर्शवाद को पूरी तरह समाज में लागू कर सकते हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय के प्रत्येक कर्मचारी को अपनी क्षमता को पहचानते हुए एवं उसका संवर्धन करते हुए इस विश्वविद्यालय को उत्कृष्ट शिखर तक पहुँचाना होगा। इसके लिए मैं आप सभी का और विशेषकर शिक्षावृन्द का आह्वान करता हूँ कि आप नयी शिक्षा नीति 2020 से सम्बंधित ड्राफ्ट का भली-भाँति अध्ययन करें, उस पर आपस में चर्चा-परिचर्चा कर अपनी समझ स्पष्ट करें तथा उससे सम्बंधित वेब कार्यक्रमों/आयोजनों का अधिक-से-अधिक लाभ उठाएँ ताकि हम अपने विश्वविद्यालय में इसे ठीक से लागू कर पाने में अपने को पूरी तरह तैयार कर सकें। आप सबकी क्षमताओं पर मुझे कोई संदेह नहीं है और मुझे पूरा विश्वास है कि आप सबके समन्वित और उत्तम प्रयास से हमारा विश्वविद्यालय इस दिशा में बहुत अच्छी तरह से आगे बढ़ सकेगा।

मैं समझता हूँ और जानता हूँ कि हम जो कुछ अब तक अच्छा कर पाए हैं और कर रहे हैं वह आप सबके सम्मिलित प्रयत्नों का ही नतीजा है। आप सबके समक्ष मुझे यह बताते हुए अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है कि इस वर्ष केंद्रीय विश्वविद्यालयों की रैंकिग में हमारा विश्वविद्यालय 83% अंको के साथ दूसरे स्थान पर है। एक अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। यह टीम वर्क है और हम जितने संगठित तरीके से, एकजुटता के साथ अपने काम को

आगे बढ़ाएंगे; उतनी ही तेजी के साथ सही दिशा में इसे आगे ले जा सकेंगे। विश्वविद्यालय हमारा परिवार है। यह हम सबकी संस्था है। इससे हमारी पहचान जुड़ी हुई है। इसकी पहचान जितनी ऊँची होगी, उतनी ही हमारी भी पहचान ऊँची होगी। यह हमारे गर्व का कारण है। आप सबके सहयोग से हम अभी तक सही दिशा में आगे बढ़े हैं और मैं भरोसा करता हूँ कि आप सबके सहयोग से ही हम इस वर्ष भी काफी कुछ कर पाएँगे। मुझे उम्मीद है कि सितंबर के महीने से हम एक नयी शुरुआत करेंगे। अतः आप सबको इस भाव के साथ पुनः स्वतन्त्रता दिवस की बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ -

देश मेरे नमन है तुझे, ऐ वतन मेरे तुझको सलाम।

हम करेंगे सदा काम ऐसे, जिनसे ऊँचा उठे तेरा नाम।

जयहिंद ! जय अरुणाचल !

कुलपति

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, दोइमुख